



डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत 18 बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : 180, बेडफोर्ड रोड, Lincoln, MA, USA ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

व्याख्या

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-35

लंकायुद्ध, सीता का उद्धार-4

हिंदी अनुवाद : मनीष श्रीवास्तव

राम स्वयं ये चाहते थे कि कोई लंकावासी ही उनकी सहायता करे। इसके दो कारण थे। पहला ये कि इससे रावण की शक्ति, उसकी सेना और सेनानायकों के कौशल को आँका जा सकता है और दूसरा कि यह व्यक्ति समुद्र पार करने में सहायक हो सकता है। समुद्र पर पुल कैसे बांधा जाये? राम विभीषण से मिलने के लिए तुरंत तैयार हो गए।

वाल्मीकि अपने इस महाकाव्य में विमानों की बात करते हैं। किन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि यह वास्तव में अभियांत्रिकी थी या मात्र काल्पनिक विज्ञान। इस विमान का उल्लेख कई स्थानों पर "मानव-उड़ान" के सन्दर्भ में किया गया है। विभीषण के लंका पार करके आने के प्रसंग में भी इसका उल्लेख है। जब तक राम का निमंत्रण उन्हें प्राप्त नहीं हुआ, विभीषण नीचे नहीं उतरे। अपने सहायकों के साथ विभीषण राम के चरणों में गिर पड़े और बोले : "मैं लंकेश रावण का अनुज विभीषण हूँ, उसने मुझे तिरस्कृत करके भगा दिया है और अब मैं आपकी शरण में आया हूँ। अपना धन, वैभव, मित्र, परिवार, बंधु सब लंका में छोड़ आया हूँ। मेरा जीवन और भविष्य अब आपके चरणों में है!"

राम के मन में बहुत समय से एक प्रश्न उठ रहा था। उन्होंने विभीषण से पूछा- "कृपया मुझे राक्षसों की शक्तियों के बारे में बताएं।" विभीषण ने विस्तार से बताना शुरू किया- "ब्रह्मा के दिए हुए वरदान के कारण पृथ्वी में रहने वाला कोई भी जीव रावण को नहीं मार सकता, चाहे वो आकाश में उड़ने वाला पक्षी, पाताल में रहने वाला सर्प या गंधर्व ही क्यों हो। उसका भाई कुम्भकर्ण भी बहुत शक्तिशाली है सिर्फ देवराज इंद्र ही

उसका सामना कर सकते हैं। आपने संभवतः रावण के प्रमुख सेना नायक प्रहस्त के बारे में भी सुना होगा। कहा जाता है कि उसने धनराज कुबेर के सेनापति मणिभद्र को परास्त किया था। रावण का बड़ा पुत्र इंद्रजीत बड़ा ही मायावी है। अस्त्र-शस्त्र और कवच में ढंका वह युद्ध भूमि में अदृश्य-सा रहता है। वह अपने शत्रुओं पर अग्नि वर्षा करता है। इनके अतिरिक्त रावण के पास महोदरा, महापार्श्व, अकम्पना जैसे योद्धा हैं। इन सेनानायकों को विश्व की कोई सेना परास्त नहीं कर सकती। असंख्य राक्षस लंका में रहते हैं। इन सबकी सहायता से रावण ने धरती के सभी राजाओं को धूल चटाई है!"

राम दृढ़ता पूर्वक बोले : "आपकी सारी बातों को मैंने ध्यानपूर्वक सुना। रावण मुझसे कहीं नहीं छिप सकता, चाहे



पाताल में चला जाए या ब्रह्मदेव की शरण ले ले। मैं रावण, प्रहस्त और उसके सभी साथियों को मार गिराऊंगा, वो चाहे जहां भी हों। मैं आपको लंका का साम्राज्य दिलाऊंगा। मैं अपने तीनों भाइयों की शपथ लेता हूँ कि मैं रावण और उसके समूचे कुल का संहार किये बिना अयोध्या वापस नहीं जाऊंगा!"

विभीषण उनके आगे नतमस्तक हो गए और उन्हें पूरे सहयोग का आश्वासन दिया। राम ने लक्ष्मण को समुद्र से थोड़ा जल लाने को कहा। उन्होंने विभीषण का लंकेश के रूप में अभिषेक किया। "आज से विभीषण ही राक्षसराज हैं, मैं इनसे बहुत प्रसन्न हूँ।" राम दृढ़पूर्वक बोले। पूरी वानर सेना राम की उदारता देखकर उत्साह से भर गयी और सभी वानर एक स्वर में उद्धोष करने लगे - "जय हो!"

हनुमान अनुभवी थे। समुद्र कैसे पार किया जाये वे इसी उधेड़बुन में लगे हुए थे। उन्हें यह पता करना था कि समुद्र कितना गहरा है, उसकी प्रकृति क्या है, कहाँ-कहाँ पर छिछली धाराएं हैं?" उन्होंने विभीषण से प्रश्न किया : "हम समुद्र को कैसे पार करेंगे?"

विभीषण जानते थे कि यदा-कदा समुद्र का जलस्तर नीचे गिरने पर भू-भाग दिखाई देने लगते हैं। कहा जाता है कि यह समुद्र देव की इच्छा पर निर्भर करता है। विभीषण हनुमान से बोले : "श्रीराम को समुद्र देव की उपासना करनी चाहिए, समुद्र को धरती से खोदकर राजा सगर ने ही निकाला था जो श्रीराम के ही पूर्वज हैं।" राम ने लक्ष्मण और सुग्रीव से विचार-विमर्श किया और फिर समुद्र के किनारे कुस घास पर लेट गए। उन्होंने ये प्रण लिया कि जब तक समुद्र देव उन्हें रास्ता नहीं देते वे वहां से उठेंगे नहीं।

राम ने तीन दिनों तक वहां प्रतीक्षा की परन्तु वहां कोई नहीं आया। राम ने सोचा "समुद्रदेव ऐसा कैसे कर सकते हैं, तीन दिनों की प्रतीक्षा के बाद मैं मुझे रास्ता नहीं दिया। संभवतः इन्हें मेरी शांतिप्रियता और क्षमायोजन का कोई आदर नहीं। इन्हें इसका फल भुगतना ही होगा। मैं इन्हें अपने बाणों की वर्षा से सुखा दूंगा।" राम लक्ष्मण से उद्बलित हो बोले।

राम अत्यंत क्रोध में थे। उन्होंने समुद्र पर विभिन्न प्रकार के बाणों की वर्षा शुरू कर दी। बड़ी-बड़ी लहरें उठने लगीं और उनमें से बड़े भयानक समुद्री जीव उछल-उछल कर बाहर हवा में उड़ने लगे। आकाश काँप उठा, धरती पर अंधकार छा गया। हर ओर हाहाकार मच गया। तभी लक्ष्मण आगे आए और उन्होंने श्रीराम को संभाला। "हे

हनुमान अनुभवी थे। समुद्र कैसे पार किया जाये वे इसी उधेड़बुन में लगे हुए थे। उन्हें यह पता करना था कि समुद्र कितना गहरा है, उसकी प्रकृति क्या है, कहाँ-कहाँ पर छिछली धाराएं हैं?" उन्होंने विभीषण से प्रश्न किया : "हम समुद्र को कैसे पार करेंगे?"

भ्राता, आप जैसे व्यक्तियों को क्रोध शोभा नहीं देता। संभवतः समुद्र पार करने के और दूसरे उपाय भी होंगे।"

तभी अचानक समुद्र के बीचों-बीच धरती दिखाई देने लगी और वहां समुद्र देव प्रकट हुए और बोले : "हे प्रभु, ये तो विधि का विधान है कि पृथ्वी, वायु, आकाश, जल और अग्नि की प्रकृति में कोई परिवर्तन न हो। जीवों की रक्षा हेतु समुद्र को तो बहना ही होगा। किंतु महान अभियंता नल मेरे ऊपर पुल का निर्माण कर सकते हैं। मैं पुल पर अपनी पकड़ बनाये रखूंगा।" तभी नल आगे आये और बोले : "मैं समुद्र के ऊपर पुल का निर्माण करूंगा। सभी सेनानायक अभी से आवश्यक सामग्री जुटाने में लग जाँएँ।"

राम की आज्ञा पाते ही सारे के सारे वानर काम पर लग गए। उत्साह से भरे वे सभी चारों दिशाओं में दौड़े और जहां तहाँ से चट्टानें और बड़े-बड़े वृक्ष तोड़-तोड़ कर लाने लगे। समुद्र साल, अश्वकर्ण, धव, बांस, कुटुजा, अर्जुन, तिलक, इनिसा, बिल्व, सप्तवर्ण, आम, अशोक और नारियल, बकुल और नीम आदि के वृक्षों से पट गया। बड़ी बड़ी चट्टानें शक्तिशाली वानरों द्वारा ढोकर लाई जाने लगीं।

साहसी एवं कुशल वानरों ने सभी चट्टानों और वृक्षों को कतारबद्ध आपस में पिरो दिया। पहले दिन चौदह, दूसरे दिन बीस, तीसरे दिन इक्कीस, चौथे दिन बाइस और अंत में पांचवे दिन तेईस योजन पूरे कर लिए गए। दस योजन चौड़ा वो पुल समुद्र में किसी आकाशगंगा सा प्रतीत होता था। सिद्ध, चारण, कर्ण, गन्धर्व और दूसरे आकाशीय प्राणी उस पुल को देखकर प्रसन्नता से भर उठे। वे सभी वानरों

सूक और सरन ने रावण से अनुरोध किया कि वो राम से संधि कर ले और सीता को वापस कर दे। रावण उनकी बात सुनते ही क्रोध से फट पड़ा। "कदापि नहीं! मैं किसी भी परस्थिति में सीता को नहीं लौटाऊंगा। तुम दोनों उन वानरों से भयभीत हो गए हो। मुझे युद्ध में कौन हरा सकता है!"

के कौशल से अर्चभित थे। विभीषण अपने सहायकों के साथ पुल के दूसरे छोर की रखवाली में लगे थे।

पुल का निर्माण पूरा होते ही सुग्रीव राम से बोले- "कृपया आप हनुमान की पीठ पर सवार हो जाएँ और भैया लक्ष्मण से कहें कि वो अंगद की पीठ पर बैठकर इस पुल को पार करें। इस समुद्र में बड़े भयानक जंतुओं का निवास है।" वानर सेना अपने सेना नायकों के पीछे चली, कुछ बीच में कुछ किनारे पर और कुछ तो समुद्र को तैर कर निकले, कुछ वानर हवा में उछलते-कूदते पुल के उस पार पहुंचे। सभी प्रसन्नता एवं उत्साह से भरे हुए थे। वानरों के शोर के आगे समुद्र भी शांत लग रहा था। सभी देवगण पुष्प वर्षा कर रहे थे। - "हे राजन! शत्रु का सर्वनाश करें और अंतकाल तक तीनों लोकों में राज करें!"

इधर रावण ने वानर सेना की शक्ति का अनुमान लगाने के लिए दो गुप्तचरों 'सुक और सरन' को भेजा। वे दोनों भेष बदल कर वानरों के बीच में घुल मिल गए। जब वे पर्वत पर चढ़ कर वानरों की संख्या का अनुमान लगा रहे थे तब उन्हें विभीषण ने पहचान लिया और बंदी बना लिया। दोनों को श्रीराम के सामने प्रस्तुत किया गया। भय से कांपते हुए उन दोनों ने अपने अभियान के बारे में बताया "श्रीमान, हम दोनों को यहां लंकेश रावण ने भेजा है हम दोनों आपकी शक्ति का अनुमान लगाने आये थे!" राम हँसते हुए बोले : "अगर आप दोनों का अभियान पूरा हो गया हो तो आप वापस लौट सकते हैं, यदि कुछ रह गया

हो तो विभीषण आपकी सहायता कर देंगे। दूत को मृत्युदण्ड नहीं दिया जा सकता!"

दोनों गुप्तचर राम की जय-जयकार करते हुए लंका वापस लौट गए।

वापस जाकर उन्होंने रावण को सूचित किया। "हम दोनों को विभीषण ने बंदी बना लिया था, किन्तु हमारा सौभाग्य था कि हमें श्रीराम के समक्ष प्रस्तुत किया गया, उन्होंने हमें क्षमा दान दे दिया। ये बड़ा ही दुर्लभ संयोग है कि चार महान वीर राम, लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषण एक साथ हैं। वे चारों ही लंका को ध्वस्त करने में सक्षम हैं। उन्हें तो वानरों की आवश्यकता भी नहीं है। और तो और उनकी पूरी वानर सेना भी उत्साह से भरी हुई है।

सूक और सरन ने रावण से अनुरोध किया कि वो राम से संधि कर ले और सीता को वापस कर दे। रावण उनकी बात सुनते ही क्रोध से फट पड़ा। "कदापि नहीं! मैं किसी भी परस्थिति में सीता को नहीं लौटाऊंगा। तुम दोनों उन वानरों से भयभीत हो गए हो। मुझे युद्ध में कौन हरा सकता है!" ऐसा कहते हुए रावण अपने महल की छत पर चढ़ गया और वानर सेना का पूरे न्यास को देखने लगा। "बताओ इनमें से कौन वीर हैं और कौन से शक्तिशाली हैं? कौन सबसे शक्तिशाली हैं? कौन सबसे अधिक उत्साहित हैं और कौन सुग्रीव की बात सुनते हैं?"

"हे राजन! लंका की ओर मुख करके चिंघाड़ता और सहस्र वानरों से घिरा नील है। और वो वहाँ विशालकाय दो पैरों पे अपनी पूँछ को लहरा कर चलता हुआ बालि का पुत्र अंगद है। अपनी असीम शक्ति के कारण वो सुग्रीव का सबसे प्रिय है। और आपके साथ युद्ध करने के लिए तत्पर है। दूसरी तरफ विशाल सेना से घिरा नल है, उसी ने इस पुल का निर्माण किया है। वहाँ जो सेनाओं को नियंत्रित कर रहा है वह स्वेत है और अपने आतंक के लिए जाना जाता है। वहाँ पर्वतों का राजा कुमुद और वो ताम्र वर्ण भयानक सा दिखने वाला धीरकंद है।"

"विंध्य पर्वत से आने वाला रम्भा और साल्वेय पर्वत से आने वाला सरभ वहाँ है। वो परियात्र पर्वत से आने वाला पनासा है। ये सभी असंख्य वानरों की सेना का सञ्चालन करते हैं। वो सहस्र वानरों की सेना लेकर चलने वाला विशालकाय वानर विनता है। वो उधर क्रोधाना की शक्तिशाली सेना अभी इसी पल आपको ललकार रही है। महान गवाय की सेना ठीक उसके पीछे खड़ी है। आदेश मिलते ही ये सभी लंका का विनाश करने के लिए उद्वेलित हैं।" ■